माँ बगलामुखी चालीसा

॥ दोहा ॥

सिर नवाइ बगलामुखी,
लिखूँ चालीसा आज।
कृपा करहु मोपर सदा,
पूरन हो मम काज॥

॥ चौपाई ॥

जय जय जय श्री बगला माता,
आदिशक्ति सब जग की त्राता।

बगला सम तब आनन माता,
एहि ते भयउ नाम विख्याता।

शशि ललाट कुण्डल छवि न्यारी,
अस्तुति करहिं देव नर-नारी।

पीतवसन तन पर तव राजै,
हाथहिं मुद्गर गदा विराजै।

तीन नयन गल चम्पक माला,
अमित तेज प्रकटत है भाला।

रत्न-जटित सिंहासन सोहै,
शोभा निरखि सकल जन मोहै।

आसन पीतवर्ण महारानी,
भक्तन की तुम हो वरदानी।

पीताभूषण पीतहिं चन्दन,
सुर नर नाग करत सब वन्दन।

एहि विधि ध्यान हृदय में राखै,
वेद पुराण संत अस भाखै।

अब पूजा विधि करौं प्रकाशा,
जाके किये होत दुख-नाशा।

प्रथमहिं पीत ध्वजा फहरावै,
पीतवसन देवी पहिरावै।

कुंकुम अक्षत मोदक बेसन,
अबिर गुलाल सुपारी चन्दन।

माल्य हरिद्रा अरु फल पाना,
सबहिं चढ़इ धरै उर ध्याना।

धूप दीप कर्पूर की बाती,
प्रेम-सहित तब करै आरती।

अस्तुति करै हाथ दोउ जोरे,
पुरवहु मातु मनोरथ मोरे।

मातु भगति तब सब सुख खानी,
करहु कृपा मोपर जनजानी।

त्रिविध ताप सब दुःख नशावहु,
तिमिर मिटाकर ज्ञान बढ़ावहु।

बार-बार मैं बिनवउं तोहीं,
अविरल भगति ज्ञान दो मोहीं।

पूजनांत में हवन करावै,
सो नर मनवांछित फल पावै।

सर्षप होम करै जो कोई,
ताके वश सराचर होई।

तिल तण्डुल संग क्षीर मिरावै,
भक्ति प्रेम से हवन करावै।

दुःख दरिद्र व्यापै नहिं सोई,
निश्चय सुख-संपत्ति सब होई।

फूल अशोक हवन जो करई,
ताके गृह सुख-सम्पत्ति भरई।

फल सेमर का होम करीजै,
निश्चय वाको रिपु सब छीजै।

गुग्गुल घृत होमै जो कोई,
तेहि के वश में राजा होई।

गुग्गुल तिल सँग होम करावै,
ताको सकल बन्ध कट जावै।

बीजाक्षर का पाठ जो करहीं,
बीजमंत्र तुम्हरो उच्चरहीं।

एक मास निशि जो कर जापा,
तेहि कर मिटत सकल संतापा।

घर की शुद्ध भूमि जहँ होई,
साधक जाप करै तहँ सोई।

सोइ इच्छित फल निश्चय पावै,
यामे नहिं कछु संशय लावै।

अथवा तीर नदी के जाई,
साधक जाप करै मन लाई।

दस सहस्र जप करै जो कोई,
सकल काज तेहि कर सिधि होई।

जाप करै जो लक्षहिं बारा,
ताकर होय सुयश विस्तारा।

जो तव नाम जपै मन लाई,
अल्पकाल महँ रिपुहिं नसाई।

सप्तरात्रि जो जापहिं नामा,
वाको पूरन हो सब कामा।

नव दिन जाप करे जो कोई,
व्याधि रहित ताकर तन होई।

ध्यान करै जो बन्ध्या नारी,
पावै पुत्रादिक फल चारी।

प्रातः सायं अरु मध्याना,
धरे ध्यान होवै कल्याना।

कहँ लगि महिमा कहौं तिहारी,
नाम सदा शुभ मंगलकारी।

पाठ करै जो नित्य चालीसा,
तेहि पर कृपा करहिं गौरीशा।

॥ दोहा ॥

सन्तशरण को तनय हूँ,
कुलपति मिश्र सुनाम।
हरिद्वार मण्डल बसूँ,
धाम हरिपुर ग्राम॥

उन्नीस सौ पिचानवे सन् की,
श्रावण शुक्ला मास।
चालीसा रचना कियौं,
तव चरणन को दास॥

[1]

---

[1] सौजन्य से:

धर्मयात्रा **(DharmYaatra)**

वेबसाइट: https://dharmyaatra.in/

व्हाट्सऐप नंबर: +917410957600

नोट: यदि आप वैदिक ज्ञान 🔱, धार्मिक कथाएं 🕉️, मंदिर व ऐतिहासिक स्थल 🛕, भारतीय इतिहास, शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य 🧠, योग व प्राणायाम 🧘‍♂️, घरेलू नुस्खे 🥥, धर्म समाचार 📰, शिक्षा व सुविचार 👣, पर्व व उत्सव 🪔, राशिफल 🌌 तथा सनातन धर्म की अन्य धर्म शाखाएं ☸️ (जैन, बौद्ध व सिख) इत्यादि विषयों के बारे में प्रतिदिन कुछ ना कुछ जानना चाहते हैं तो आपको धर्मयात्रा संस्था के विभिन्न सोशल मीडिया खातों से जुड़ना चाहिए। उनके लिंक हैं:

व्हाट्सएप ग्रुप व्हाट्सएप चैनल

फेसबुक पेज इंस्टाग्राम प्रोफाइल